स्वतः अर्थद्योतन में समर्थ रचना मुक्तक कहलाती है।"

प्रश्न ४—गीतिकाव्य की परिभाषाएँ लिखकर उसके स्वरूप और उसकी विशेषताओं को स्पष्ट कीजिये।

गीति कवि के अन्तःस्थल से निःसृत होने वाली वह मनोहर निर्झरिणी है जिसमें संगीत की लोल लहरियों की थिरकन और भावों की मधुरिम तरंगावलियों का नर्तन समाविष्ट रहता है। निःसन्देह काव्य-कला अपने कोमलतम स्वरूप को लेकर गीतिकाव्य में ही अवतरित हुई है। गीतिकाव्य का अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द लिरिक (Lyric) है जिसका सम्बन्ध वीणा के सदृश एक वाद्य यन्त्र से है। इसीलिये कुछ लोगों ने लिरिक का अनुवाद वैणिक भी किया है। वैणिक या लिरिक का मूल अर्थ तो वीणा से सम्बद्ध है परन्तु प्रायः उन सभी गेय पदों के लिये गीतिकाव्य शब्द प्रयुक्त किया जाता है जिनसे भावातिरेक के साथ निजीपन का प्राधान्य रहता है।

Scanned with CamScanner

वस्तुतः संगीत यदि गीत का कमनीय कलेवर है तो [illegible] होने वाला प्राणतत्व है, जिसके अभाव में गीत निर्जीव एवं निष्प्राण हो जाता है। यह भावातिरेक सुखात्मक या दुःखात्मक दोनों ही हो सकता है। गीतिकाव्य की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए महादेवी वर्मा ने इस प्रकार इसकी परिभाषा की है —"साधारणतः गीत व्यक्तिगत सीमा में तीव्र सुख-दुःखात्मक अनुभूति का वह शब्द-रूप है जो अपनी ध्वन्यात्मकता में गेय हो सके।"

गीतकाव्य की अनेक परिभाषाएँ प्राच्य एवं पाश्चात्य विचारकों ने अपने-अपने मतानुसार की हैं। हडसन के अनुसार—'शुद्ध गीतिकाव्य में एक ही भाव, एक ही उमंग भावावेश के साथ संक्षिप्त रूप में व्यंजित होता है। विस्तार उसके प्रभाव को कम कर देता है।" हरबर्ट रीड के अनुसार ही—"सुखद अनुभूतिमय संगीत को गीतकाव्य कहा जाता है।" राइस के शब्दों में—"भाव या भावात्मक विचार के लयमय विस्फोट को गीतिकाव्य कहते हैं।" हीगेल का कथन है कि "जब विषयहृदय में प्रविष्ट होकर कवि अपनी अनुभूति को चित्तवृत्तियों के अनुरूप मधुर कोमलकान्त पदावली में व्यक्त करता है तब गीत को जन्म मिलता है।"

डॉ० श्यामसुन्दरदास के अनुसार, "गीतिकाव्य में कवि अपनी अन्तरात्मा में प्रवेश करता है, बाह्य जगत् को अपने अन्तःकरण में ले जाकर उसे अपने भाव में रंजित करता है। उसमें शब्द-साधन के साथ स्वर (संगीत) की साधना होती है।"

उपर्युक्त प्राच्य-पाश्चात्य मतों के पर्यावलोकन के उपरान्त हम कह सकते हैं कि "गीतिकाव्य या प्रगति कवि की वह निजी सुख-दुःखमयी तीव्र संकल्पात्मक भावानुभूति का कोमल शब्दावली में संक्षिप्त खण्ड नच्छ्वास है, जो अपनी ध्वन्यात्मकता में गेय एवं संगीतात्मक होता है।"

गीतिकाव्य के तत्त्व—गीति काव्य के निम्नलिखित सात तत्त्व हैं—

१. भावप्रवणता—मानव का हृदय-तल असंख्य भावों और अनुभूतियों का क्रीड़ा-स्थल है। प्रेम, करुणा, हर्ष एवं विषाद आदि भाव उसमें सदैव विद्यमान रहते हैं। कवि अपने गीतों में अन्तरतम के इन्हीं मूल भावों को वाणी प्रदान करता है। हृदय की सुख-दुःखात्मक वृत्तियाँ ही गीतिकाव्य का विषय बनती हैं। गीत में हृदय की कोमल भावनाओं का सहज स्वाभाविक स्फुरण होता है: कवि के अन्तर की अनुभूति जब घनीभूत होकर अपनी तीव्रता की चरम सीमा पर पहुँच जाती है तभी गीतिकाव्य का जन्म होता है। करुणा के भाव को गीति का स्रोत माना गया है। क्रौंच पक्षी के करुणक्रन्दन को सुन आदिकवि के मुख से स्वतः कविता फूट पड़ी थी। कवि पन्त ने भी लिखा है—

"वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान।
उमड़ कर आँखों से चुपचाप, बही होगी कविता अनजान॥"

अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवि शैली ने भी इसी बात को इस प्रकार कहा है—

Our sweetest songs are those
That telleth saddest thought."

इन उद्धरणों का यह अभिप्राय नहीं है कि गीत केवल करुणा से ही अनुस्यूत होता है, अपितु इनका तात्पर्य यह है कि गीत भावावेश के तीव्रता चरम बिन्दु का परिचायक है। भावप्रवणता गीतिकाव्य का सर्वप्रधान तत्व है। गीत में वर्णित भाव जितना अधिक गहन एवं उदात्त होगा, गीत उतना अधिक उत्कृष्ट कोटि का कहा जायेगा।

२. आत्माभिव्यक्ति—गीतिकाव्य का दूसरा महत्वपूर्ण तत्व आत्माभिव्यक्ति है। गीत-सृजन के मूल में चूंकि कवि के निजी सुख-दुःखमयी अभिव्यक्ति रहती है अतएव इसका स्वरूप आत्माभिव्यक्तिपरक बन जाता है। परन्तु विशेषता यह है कि यह अभिव्यक्ति आत्मपरक होते हुए भी सबकी अनुभूति बन जाती है। गीत का आस्वादन करने वाला प्रत्येक पाठक और श्रोता कवि की अनुभूति से तादात्म्य स्थापित कर लेता है। गीत-रचना स्वान्तः सुखाय होते हुए भी अन्तरान्त सुखाय हो जाती है। गीतकार के गीतों का 'मैं' व्यक्ति विशेष के भावों का अभिव्यंजक न रहकर समस्त काव्यशास्त्र के भावों का सूचक बन जाता है। इसी में गीतकार की सफलता निहित है। यदि वह निजीपन की झोंक में गीत को स्वान्तः सुखाय तक ही सीमित रखता है, तो उसकी अभिव्यक्ति सफल नहीं कही जायेगी। गीतकार की दृष्टि अपेक्षाकृत सीमित वैयक्तिक और आत्मनिष्ठ होती है। रस्किन के शब्दों में "गीति-काव्य कवि की निजी भावनाओं का प्रकाश होता है। सहज शुद्ध भाव, स्वच्छन्द कल्पना, तर्कवाद, न्यायमूलकता से मुक्त विचार ये ही गीतिकाव्य की वास्तविक विशेषताएँ हैं।" गीति की संगीतात्मकता इसी का अनिवार्य परिणाम कही जा सकती है। ब्रनेतियर ने कहा है "गीतिकाव्य में कवि भावानुकूल लयों में अपनी आत्मनिष्ठ वैयक्तिक भावना व्यक्त करता है।"

३. सौन्दर्यमयी कल्पना—गीतिकाव्य आत्मा की अनुभूति का व्यक्त रूप है, गीतिकार अपनी खण्ड अनुभूतियों, मार्मिक सौन्दर्यमयी कल्पना द्वारा व्यक्त करता है। वह रूप-विधान, बिम्ब, प्रतीक, उपमान आदि के प्रयोग से अपनी कृति में अपूर्व सौन्दर्य का सृजन करता है। इस काव्य सृष्टि में सौन्दर्यमयी कल्पना महत्वपूर्ण योग-दान करती है।

४. संक्षिप्त आकार—गीतिकाव्य में खण्ड अनुभूतियों को व्यक्त किया जाता है, यह अनुभूति संक्षिप्त होती है अतः सघन और मार्मिक होती है। यदि भावना का अधिक विस्तार होता तो भाव की सघनता और तीव्रता कम होने का डर रहता है। कल्पना से कृत्रिम प्रयोग से जब कवि अनुभूति का वर्णन विस्तार से करने लगता है तो गीतिकाव्य की आत्मा को हानि पहुँचती है।

५. संगीतात्मकता अथवा गेयता—गीतिकाव्य संगीतात्मकता होता है, अतः गेयता या स्वर तथा शब्दों को संगीतात्मकता उसका प्रधान स्वर है। इसके लिए कोमलकान्त पदावली को अपनाता है। साथ ही यह ज्ञातव्य है कि संगीतात्मकता भावों की उपज है न कि तबले की थाप। "गीति का सहज स्वाभाविक रूप उसकी संगीतात्मकता और गेयात्मकता में ही सुरक्षित रहता है। उसकी प्रभाव-शक्ति भी इससे बढ़ती है। संसार के श्रेष्ठ गीत गेय हो हैं और रहेंगे।"

६. प्रभावान्विति और समाहित प्रभाव—गीतिकाव्य में किसी एक मार्मिक अनुभूति को शब्दबद्ध किया जाता है, अतः उसमें एकसूत्रता और एक श्रेय रहता है। अतः वह समाहित प्रभाव को उत्पन्न करता है। जिस गीत में जितनी प्रभावान्विति

Scanned with CamScanner

होगी, वह उतना ही सुन्दर और मार्मिक होगा। यह प्रभान्विति ही गीतिकाव्य को एक स्वतन्त्र और पूर्ण रचना का पद प्रदान करती है। "गीति-रचना की प्रथम आवश्यकता यह है कि उसमें संवेगात्मक एकता या भाव संतुलन सुरक्षित रहे। जिसमें किसी एक ही विचार; भाव या परिस्थिति का चित्रण सम्भव है।...गीति की भाव-मूलक एकता में उसके आकार की लघुता का गुण भी निहित है। किसी एक तीव्र अनुभूति भाव की स्थिति अधिक देर तक विकासशील नहीं रह सकती। यदि उसे बढ़ाया जायेगा, तो उसमें पुनरुक्ति, उपदेशात्मकता, वर्णनात्मकता और परिणामस्वरूप प्रभावहीनता आ जायेगी। कवि की आत्मनिष्ठ तीव्र भावानुभूति अखण्ड और मूर्त्त रूप में गीति के लघु आकार में ही सुरक्षित रह सकती है। प्रेरणा प्राप्त सौन्दर्य-कल्पना से प्रसूत गम्भीर मनोवेग की अभिव्यक्ति में गीति की तीव्रता भी स्वाभाविक है और समाहित प्रभाव भी।"

७. **कलात्मक कोमलकांत पदावली**—गीतिकाव्य कवि की स्वानुभूतिजन्य सौन्दर्यमयी कल्पना है, अतः शब्दबद्ध करने के लिये कोमलकांत पदावली की नितांत आवश्यकता होती है। क्योंकि "गीति काव्य में कोमल भावनाओं के अनुरूप मसृण, कोमल, सुन्दर प्रवाहात्मक एवं कलात्मक भाषाशैली होती है।" इस दृष्टि से हिन्दी साहित्य के गीति-काव्य के इतिहास में विद्यापति, सूर, तुलसी मीरा आदि का नाम लिया जा सकता है किन्तु इस दृष्टि से छायावादी कवियों का कार्य ज्यादा उल्लेखनीय है। "भाषा की लाक्षणिक व्यंजना-शक्ति, सुन्दर मूर्त-अमूर्त विधान, स्वाभाविक अलंकरण, नई सौन्दर्य-सृष्टि, नयी उपमान-योजना आदि सभी कलात्मक प्रसाधनों का विकास गीति-काव्य ने अपने छायावादी काल में कर लिया था।"

पाश्चात्य समीक्षा में गीतिकाव्य की जो विशेषताएँ हैं, उनमें संगीतात्मकता और आत्माभिव्यक्ति, अर्थात् "अन्तर्निहित संगीतात्मकता और तीव्र अनुभूतिपूर्ण स्वानुभूतिमूलकता को गीतकाव्य की आत्मा स्वीकार किया गया है। उन्हीं के परिणाम-स्वरूप गीति में सरल उद्रेक, नवोन्मेष, सद्यःस्फूर्ति, स्वच्छता, अनाडम्बर आदि विशेषताएँ आ जाती हैं।"

Scanned with CamScanner